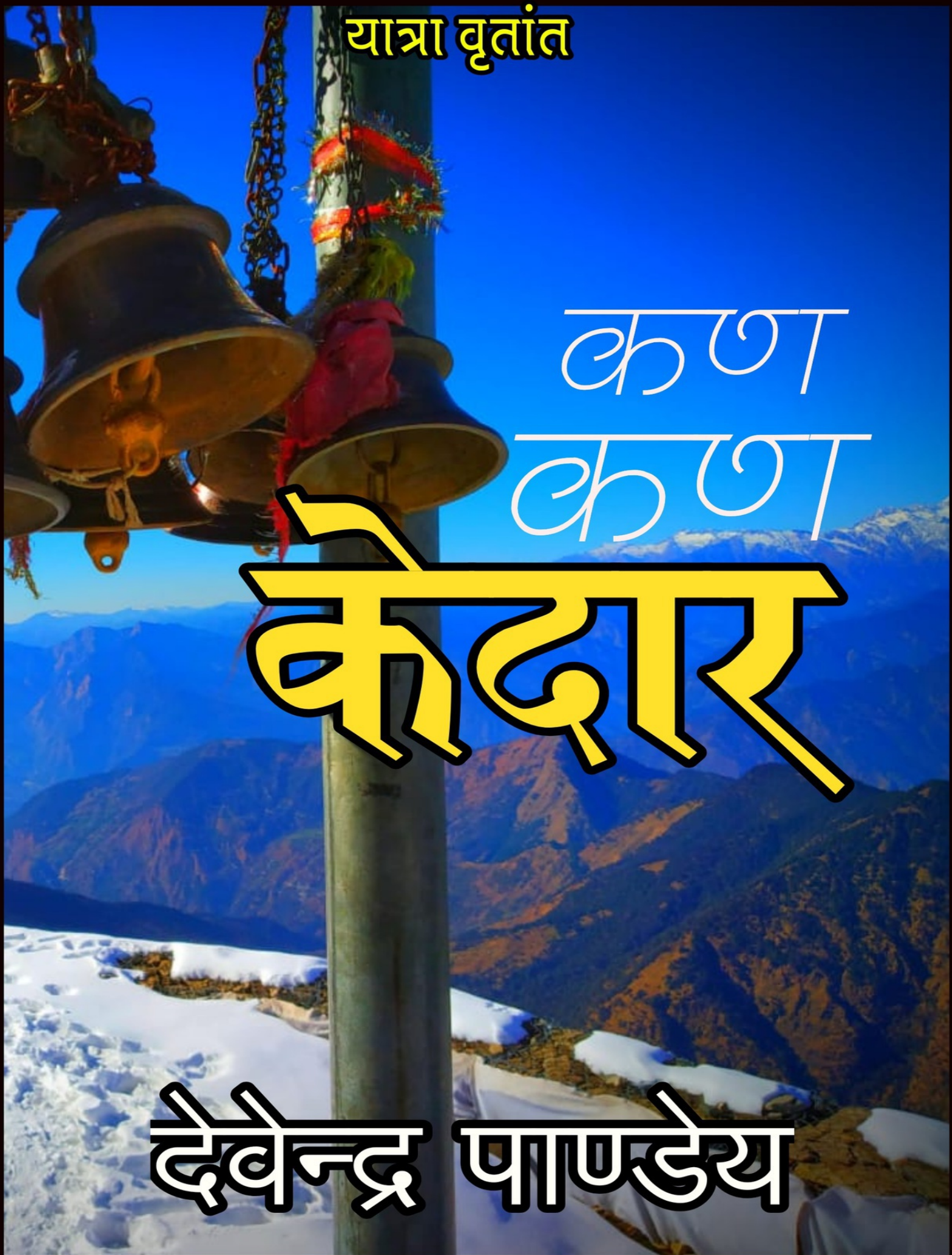
यात्रा वृतांत
कण कण
केदार
देवेन्द्र पाण्डेय

कण कण
केदार

--

By

Devendra Pandey

All rights are reservedı No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the author

©2020; Author- Devendra Pandey
First published in Kindle (May 2020)
Cover Photo- Devendra Pandey
Cover Design & Typeset – Mithilesh Gupta
Genre- Travelogue
Price (in India) – Rs. 99

इश्क़-बकलोल , बाली : युग युगांतर प्रतिशोध, और **रोड ट्रिप-**13000 फ़ीट के सुप्रसिद्ध युवा लेखक 'देवेन्द्र पाण्डेय' की कलम से उपजी एक यात्रा वर्तान्त

चोपता-तुंगनाथ यात्रा

आखिरकार एक वर्ष की प्रतिक्षा और बनती बिगड़ती अनिश्चित योजनाओं के पश्चात इस दिसम्बर (2018) में चोपता-तुंगनाथ जाने की योजना सफल हुई। मैंने अपने जीवन मे प्रथम बर्फ की सफेद चादर यहीं देखी थी। सोशल मिडिया एवं अन्य ट्रैवल ब्लॉग पढ़ कर मैंने इस यात्रा से संबंधित सारी जानकारियाँ जुटा ली थी। इस यात्रा में मेरे साथ थी मेरी पत्नी नीलम, उनकी छोटी बहन साधना। यह हमारी पहली हिमालयन यात्रा थी, इसके पहले साधना और नीलम ने चोपता-तुंगनाथ का नाम तक नहीं सुना था, हालांकि मैंने भी इस स्थान का नाम बस छह महीने पहले किसी हिमालयन ग्रुप पर सुना था। वहां की आकर्षक तस्वीरें एवं महादेव जी के मंदिर के विषय में जानकर मेरी उत्कंठा बढ़ गयी थी। हमने पिछले वर्ष वैष्णो देवी की यात्रा साथ की थी, इस बार उत्तराखंड में कहीं जाने की योजना बनी तो मैंने दोनों को इस विषय में बताया, नीलम और साधना ऋषिकेश-हरिद्वार के नाम पर खुश हो गयी। मैंने बर्फ पड़ने का सही समय पता करके दिसम्बर मध्य का टिकट बुक कर दिया, हालांकि टिकट दिल्ली का था, दिल्ली से आगे हम बस द्वारा जाने वाले थे।

यात्रा का दिन आ गया और हमने बांद्रा से अपनी ट्रेन पकड़ी, ट्रेन अगले दिन दिल्ली पहुँच चुकी थी, एक दिन दिल्ली में आराम और कुछ गर्म कपड़े खरीद कर अगली सुबह हम कश्मीरी गेट पहुंचे, वहां से एक बस में स्लीपर सीट बुक करके हम अपनी मंज़िल की ओर बढ़ गए। मैंने ऋषिकेश से एक कैब बुक कर रखी थी जिसमे वापसी किराया शामिल था। बस वगैरह की सुविधा थी लेकिन वो थोड़ा अनिश्चित एवं भागदौड़ भरा पर्याय लगा इसलिये खुद की कैब ज्यादा सुविधाजनक लगी भले पैसे थोड़े ज्यादा खर्च करने पड़े। रात हमने हरिद्वार के होटल में बितायी और अगले दिन सुबह सुबह ऋषिकेश के लिए रवाना हो गए, यहां दिल्ली से ज्यादा ठंड थी, हमने एक होटल में रुक कर नाश्ता किया कि ड्राइवर का फोन आ गया, वह ऋषिकेश में कहीं हमारी प्रतीक्षा कर रहा था, हमने एक ऑटो की और उस स्थान पर आकर उतरे। ड्राइवर जी से भेंट हुयी, वे सब्जियां खरीदने में व्यस्त हो गए जो आगे काम आनी थी, खरीदी होने के पश्चात हम अपनी कार में सवार हो गए और महादेव एवं गंगा मैय्या का जयकारा लगा कर आगे बढ़े। सुबह के साढ़े दस बज रहे थे, मैंने ड्राइवर से पूछा हम कब तक पहुँच जायेंगे? मेरा खयाल था कि हम पांच छह बजे तक पहुँच जायेंगे लेकिन ड्राइवर ने ग्यारह घंटे बता कर पूरा जोश ठंडा कर दिया। खैर अब कुछ किया नहीं जा सकता था, मार्ग के दोनों ओर की खूबसूरती देख कर मन प्रसन्न हो रहा था, लम्बा रास्ता था किन्तु इन खुबसुरत नजारों के कारण समय का पता ही नहीं चल रहा था।

ऋषिकेश से चोपता तक का लगभग 200 कि.मी. का अंतर मानो कटने का नाम ही नही ले रहा था, मैंने अनुमान लगाया था कि 50 किमी प्रतिघन्टा भी यदि कैब चली तो भी अधिकतम 5 घण्टो में हम चोपता में रहेंगे, लेकिन सारा गणित तब बिगड़ गया जब गाड़ी 30 किमी प्रतिघन्टा के हिसाब से चलने लगी। ऊपर से चार धाम योजना सड़क निर्माण के कारण जगह जगह कटिंग चल रही थी, जिस कारण हमें उकीमठ पहुंचने तक ही अच्छी खासी रात हो गयी, रास्ते मे जब थकान अधिक हो गयी तब एक छोटे से होटल में रुक कर गरमागरम चाय और मैंगी का नाश्ता किया, मैंने इतनी स्वादिष्ट मैंगी आज तक नही खायी थी, मन प्रफुल्लित हो गया, इस समय तक

हवा में ठंडक भी काफी हो चुकी थी।

हम पुनः अपनी कैब में सवार हो अपनी मंजिल की ओर चल पड़े, सात घण्टे बीत चुके थे, कुछ घण्टो बाद हम उकीमठ पहुंचने वाले ही थे कि कैब के सामने ही रास्ते के मध्य एक जीव ने छलांग लगाई।

हमारी सांसे तब रुक गयी जब हमने उसे गौर से देखा।

वह एक बाघ था, बाघ को पिंजरे में और फिल्मों में देखना अलग बात है, और चलते रस्ते में देखना अलग। वह तो शुक्र था कि नीलम सो रही थी, मै और साधना ही गप्पे लड़ा रहे थे इसलिए हमें बाघ को देखने का अवसर मिला, साधना की सिट्टी पिट्टी गुम हो चुकी थी, हम आखिर कौन सी जगह पर जा रहे है जहां बाघ सियार सड़कों पर खुले घूम रहे है, यह सोच सोच कर वह भी परेशान थी। नीलम इस हंगामे को सुनकर जागी लेकिन तब तक बाघ नीचे खाई में कहीं लुप्त हो चुका था। उसने हंगामे का कारण पूछा तो हमने बाघ के गाडी के सामने आने के विषय में बताया तो वह घबरा गयी, उसे लगा कि हम दोनों मिलकर उसे बुद्धू बना रहे है। आगे बढने पर सियारों का एक दल रास्तें में आ गया नीलम ने सियारों को देखा तो उसे हमारी बात पर विश्वास हो गया।

हमारी सिट्टी-पिट्टी बाघ को देखकर पहले ही गुम हो गयी थी, ड्राइवर ने बताया कि यहां बाघ वगैरह सामान्य बात है, चोपता में भी पहाड़ो पर बर्फ जमने के बाद बाघ नीचे उतर आते है, बाघ तो फिर भी ठीक लेकिन अक्सर भालू सामने पड़ जाता है, इस समय तो होंगे ही।

हमारी सुबह 3 बजे तुंगनाथ और चंद्रशिला ट्रैंकिंग की योजना थी लेकिन बाघ देखने के बाद हिम्मत ही नही हुयी कि अंधेरे में ट्रैक करें। सर्दियों में पहाड़ियों पर बर्फ गिरने से बाघ और भालू जैसे जानवर नीचे आ जाते है, इसलिए इस समय रात की ट्रैंकिंग खतरनाक मानी जाती है। बाघ को इस तरह बेफिक्र घूमता देख और भालू का उल्लेख सुनकर साधना ने फौरन रात्रि ट्रैंकिंग की योजना खारिज कर दी। हमारी योजनानुसार केवल हम दोनों ही तुंगनाथ और चंद्रशिला की ट्रैंकिंग करने वाले थे, श्रीमती जी का स्वास्थ्य ट्रैंकिंग के अनुकूल न होने की वजह से उन्हें कैम्प में ही रुकना था। उनकी छोटी बहन और मुझमे अच्छी ट्यूनिंग है, और हम थोड़ा फुर्तीले भी है, हमे पिछले वर्ष वैष्णो देवी का भी अच्छा खासा अनुभव था। यहां बताना चाहूंगा कि जब भी कही यात्रा की योजना बनती है तब मैं किसी दोस्त के साथ नही जाता। मैं, नीलम और साधना, हमारी स्वयं की तीन मेम्बर्स की टीम है जो हमेशा नई नई जगहों पर यात्रा करती है, इसलिए मुझे किसी अन्य मित्र की कभी आवश्यकता नही पड़ी। एक साल से उत्तराखंड घूमने की योजना बन रखी थी, विभिन्न ट्रैवेल ग्रुप्स से मुझे चोपता-तुंगनाथ के विषय मे पता चला, मैंने गूगल से चोपता-तुंगनाथ के विषय मे अनेक आलेख, और जानकारीपूर्ण ब्लॉग पढ़े, यूट्यूब पर वीडियोज भी देखे और मंत्रमुग्ध रह गया कि अब यही जाना है, बाकी जगहें भले ना जाये। इससे पहले ऋषिकेश, हरिद्वार, मसूरी और धनौल्टी की योजना बनी थी। मसूरी और धनौल्टी केवल स्नो फॉल हेतु जाने की इच्छा थी, किन्तु चोपता-तुंगनाथ के विषय मे पढ़ -देख-सुन कर उत्कंठा इतनी बढ़ी कि मसूरी और धनौल्टी अपने आप इस योजना से बाहर हो गए। अब यात्रा का मुख्य उद्देश्य केवल तुंगनाथ रह गया था। खैर हम अब उकीमठ पार कर चुके थे, कुछ ही देर में हम चोपता पहुंचने वाले थे, रास्ते

के दोनों किनारों पर बर्फ की सफेद चादरें दिखाई देने लगी थी। मैंने श्रीमती जी को जगाया और बर्फ दिखाई, वे किसी बच्चे की भांति किलकारी मार उठी और देखने लगी, उस अंधेरे में भी केदार,चौखम्बा पर्वतशृंखलाओ की सफेद चोटियां चंद्रमा के दूधिया प्रकाश में स्पष्ट चमक रही थी। वह वाकई बेहद अद्भुत और दिव्य दृश्य था, एक ओर घना जंगल मध्य में संकरा रास्ता, बर्फ की झिलमिल चादरें, सितारों भरा स्पष्ट आकाश, और दूध से सफेद बर्फाच्छादित पर्वत श्रृंखलाएं, यह किसी परिकथा के परिवेश जैसा था, कुछ कुछ हमे नार्निया जैसी फिल्मों की याद आ गई। हम तीनों सदैव बकबक करने वाले प्राणी है किंतु वह परिवेश देख कर हम मन्त्रमुग्ध से हो गए थे। भावनाएं अपने चरम पर थी, बस आंखों के कोनो में नमी सी महसूस हुयी, कुछ ही क्षणों में हम अपनी मंजिल पर पहुंच चुके थे, कैम्प वाले भाई साहब का लगातार फोन आ रहा था और वे हमारे स्वागत के लिये खड़े थे, मैंने कैम्प और चार्जेस के विषय मे एक महीने पहले ही जानकारी निकाल कर बात तय कर रखी थी और ज्यादा ना भटकते हुए अपनी बात वही तय रखी। इसलिए मुझे स्पष्ट पता था कि मुझे कहा जाना है, साधना हैरान थी कि मुझे उन सारी जगहों के विषय मे एकदम सटीक जानकारी कैसे थी, उन्होंने कई बार पूछा भी कि आप यहां पहले भी आ चुके हैं? मैंने ना में सिर हिला दिया अब उन्हें क्या बताता कि पिछले दस महीनों से मैं केवल चोपता-चंद्रशिला-तुंगनाथ में ही आकंठ डूबा हुआ था। खैर हमारी कैब रुकी और दरवाज़ा खुला, दरवाज़ा खोलते ही मेरे दोनो कान एकदम सुन्न हो गए, उंगलियां मानो जमी हुयी बर्फ में चले गए से प्रतीत हो रहे थे।

चोपता में तो कल्पना से भी अधिक ठंड थी। फौरन कंपकम्पी आरम्भ हो गयी, हमारे मेजबान ने फौरन जैकेट्स पहनने को कहा, हमारे पास सामान्य गर्म कपड़े थे, लेकिन इसके बावजूद मैंने करोल बाग से आने के पहले ही सस्ते दामों में कुछ बढ़िया गर्म जैकेट्स खरीद लिए थे, वे वाकई उपयोगी साबित हुये, दस्ताने और कनटोप भी मैंने सुरक्षा के लिए पहले ही खरीद रखे थे, अब तक उनका उपयोग नही हुआ था, गाड़ी से बाहर आते ही हमने सबसे पहले दो जैकेट्स, दस्ताने और कनटोप पहन लिये। बात ही नही हो पा रही थी और दांत किटकिटा रहे थे। हमारे मेजबान ने दूर से हमारा कैम्प दिखाया जो इस चांदनी रात में हल्का सा दिखाई दे रहा था और मार्गदर्शक बनकर चलने लगे, कैम्प मुख्य सड़क से लगभग हजार कदम की दूरि पर था, किन्तु यह मामूली दूरी भी इस प्रकार भारी पड़ रही थी मानो हम किसी खड़े पहाड़ पर चढ़ रहे हो, किसी प्रकार हम कैम्प पहुंचे और अपना बैग वहां पटक दिया।

मेजबान ने बताया कि कुछ दिनों पहले इसी कैम्प में सारा अली खान रुकी थी जिसमे हम ठहरे थे, ख़ुशनसीबी यह रही कि मेरी नीलम और साधना को सारा अली खान के विषय मे कुछ पता नही था, और मुझे तो फर्क ही नही पड़ता था, मैंने मज़ाक में मेजबान से कहा भी कि मैं सारा के ठहरने की वजह से कोई एक्सट्रा चार्जेस नही दूँगा, तो वे हंस पड़े। साधना का सपना था कि वो किसी जंगल अथवा हिल स्टेशन पर बोन फायर का आनन्द उठाये, इस विषय मे उन्होंने गाड़ी में भी चर्चा की थी। तो पहुंचते ही मेजबान ने कुर्सियां रखवा कर लकड़ियां सुलगाकर अलाव की व्यवस्था करवा दी। वाकई उस गला देने वाली ठंड में अलाव तापने का अपना ही मजा था। हम ने जल्दी जल्दी से अपने कपड़े बदले और बाहर कुर्सियों पर बैठ अलाव का मजा लेने लगे। कैम्प बेहद खूबसूरत जगह पर था, जहां से केदार पर्वतशृंखलाये इस अंधेरे में भी किसी मोती की भांति